पाठ 13. राजा और पुजारी

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में तदनुरूपता संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे अपरिचित परिस्थितियों में जीवन को समझने में सक्षम हो सकें। प्रस्तुत पाठ एक पत्र रूप में है जो जवाहरलाल नेहरू जी ने अपनी पुत्री इंदिरा गांधी के लिए लिखा था। नेहरू जी ने इस पत्र में भारत के लोगों की दशा तथा धर्म संबंधी विचारधाराओं का वर्णन किया है।

पाठ का सार

नेहरू जी जब जेल में थे तब वे अपनी पुत्री इंदिरा गांधी से पत्र-व्यवहार किया करते थे। उन्हीं में से एक पत्र में नेहरू ने लिखा था कि आदमियों की कई श्रेणियाँ बँट गई हैं। अमीर लोग गरीबों का शोषण करते हैं तथा उनके हिस्से की कमाई भी खुद ही हड़प लेते हैं। शुरुआत में राजा तथा पुजारियों का बहुत दबदबा था। पुजारी खुद को भगवान का दूत मानते थे तथा लोगों को डराते थे। इनसान को जिससे भी डर लगता था उसी को वे देवता मान लेते थे। मूर्तियाँ बड़ी भयानक तथा डरावनी होती थीं। उनका खयाल था कि देवता डरावने होते हैं। उस ज़माने में पंचांग या पत्रा नहीं होते थे, त्योहारों से ही दिनों का हिसाब लगाया जाता था।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  निराला जी की एक कविता है–'राजे ने अपनी रखवाली की'। उसी के मुख्य विचार बिंदु से राजा बनने की भूख और उस भूख को पूरा करने के तंत्र पर विचार करते हुए मानव सभ्यता के विकास का क्रम समझाते हुए प्रस्तुत पत्र तक पहुँचने की ज़मीन तैयार करें। पत्र का पठन एक साथ आदर्श वाचन के रूप में करवाएँ। फिर अनुकरण वाचन करवाते समय रुक-रुककर शब्दार्थ व विशेष प्रसंगों पर टिप्पणियाँ की जा सकती हैं। पाठ पूरा होने पर मूल बिंदुओं को श्यामपट्ट पर लिखें और उनपर विशेष चर्चा करें। धर्म, आस्था, मूर्तिपूजा के औचित्य, आदि से संबंधित प्रश्नोत्तर किए जा सकते हैं।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 40** देखें।
  - **भाषा आधारित प्रश्नों** का उद्देश्य हिंदी भाषा के व्याकरण-पक्ष को सुदृढ़ करना है।
  - प्राणिवाचक शब्दों में लिंग की पहचान आसान होती है। लेकिन अप्राणिवाचक शब्दों का सबसे आसान तरीका होता है उनका वाक्य में प्रयोग करके देखना। कुछ उदाहरणों के द्वारा इसे समझाया जा सकता है। प्राणिवाचक शब्दों में भी कुछ शब्द नित्यपुल्लिंग होते हैं (जैसे–कौआ) और कुछ शब्द नित्य स्त्रीलिंग होते हैं (जैसे– मैना)। ऐसे शब्दों के विपरीत लिंग उनके साथ नर/मादा जोड़कर बनाए जाते हैं। इन बिंदुओं के बारे में विस्तार से समझाएँ।
  - समास की परिभाषा दें। विभिन्न प्रकार के समासों के बारे में उदाहरण देकर बताएँ। समास-विग्रह की प्रक्रिया ठीक से समझाएँ। बच्चों को यह भी बताएँ कि कुछ विद्वान कर्मधारय और द्विगु समास को तत्पुरुष समास का ही भेद मानते हैं। ऐसा मानने के पीछे उनका तर्क क्या होता है, यह भी बताएँ।

क्रियाकलाप के लिए संकेत

- 'नहीं चलेगा गुंडाराज' जैसे स्लोगन कक्षा में तो लगाए ही जा सकते हैं, विशेष अवसरों पर ऐसे प्रयोगों से लघु नाटक तैयार कर विद्यालय में विशेष अवसर पर भी दिखाया जा सकता है।
- अनुच्छेद व पत्र लेखन से पहले कक्षा में विचार-विमर्श अवश्य करें।